प्रथम संस्करण | 1 जनवरी 2020 | मासिक पत्रिका

Advt.

राठ बाल वाणी

संतोष देवी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित

प्रेरक लेख

जीवन में शिक्षा का महत्व

राजकुमार यादव
ज्वाइन्ट कमिश्नर ऑफ इनकम टैक्स
I.R.S.

शिक्षा वह जादू की छड़ी है जिससे व्यक्ति अपने किसी भी मुकाम को हासिल कर सकता है। यह वो धन है जिसे ना तो कोई छीन सकता है, ना कोई चुरा सकता है और ना ही कोई बाँट सकता है।

शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आज अमेरिका, रूस, जापान, इजराइल एवं चीन समेत दुनिया के जितने भी ताकतवर देश हैं, उनकी प्रगति में शिक्षा व तकनीक का महत्त्वपूर्ण योगदान है। महात्मा गाँधी, डॉ. अम्बेडकर, महामहिम अब्दुल कलाम साहब समेत देश के अनेकों महापुरुषों का जीवन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। शिक्षा ना केवल व्यक्तित्व निर्माण में बल्कि समाज के विकास में भी महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा से समाज में जाति, धर्म एवं लिंग के आधार पर होने वाला भेदभाव समाप्त होता है तथा समानता पूर्वक सम्बन्धों वाले समाज की स्थापना होती है। यह हमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य व पर्यावरण के मुद्दों के प्रति सजग व जागरूक बनाती है, जिससे अन्तिम रूप से बेहतर नागरिक तथा बेहतर राष्ट्र का निर्माण होता है। शिक्षा पुरुष व नारी के लिये समान रूप से उपयोगी है। महिला शिक्षा ने न केवल महिलाओं के लिये रोजगार के अवसर खोलें हैं बल्कि उन्हें घर से बाहर निकलने की आजादी दी है; ताकि समाज की आधी आबादी एक स्वस्थ, सम्मानित व बेहतरीन जिन्दगी जी सके। शिक्षा ने महिलाओं को ना केवल केई सामाजिक कुरीतियों से बचाया है बल्कि सशक्त भी बनाया है। आज स्वास्थ्य, सेना, पुलिस, चिकित्सा, अन्तरिक्ष, शिक्षा, खेल व्यवसाय, राजनीति एवं अन्य सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी व सफलता इसका जीता जागता उदाहरण है। पहले शिक्षा कठिन तथा महँगी थी लेकिन आधुनिक युग में सरकार तथा निजी क्षेत्र की भागीदारी एवं दूरस्थ शिक्षा के विकल्पों ने रास्ते आसान कर दिये हैं। प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा शरीर, मस्तिष्क के विकास एवं संस्कार निर्माण का मुख्य काल है। उच्च शिक्षा भविष्य में आगे बढ़ने के अनेक मार्ग खोलती है, यह हमारे ज्ञान के स्तर, तकनीकि कौशल में वृद्धि व कैरियर निर्माण में सहायक है तथा मानसिक, बौद्धिक व व्यक्तित्व के स्तर पर मजबूत बनाती है।

आज माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, फेसबुक, अमेजन, Whatsapp, वॉल्मार्ट, मेक माई ट्रिप जैसी अनेक सोशल मीडिया तथा व्यापारिक कम्पनियाँ जिस तेजी से बढ़ रही हैं तथा इनके प्रोमोटर जितना मुनाफा कमा रहे हैं। इसमें केवल शिक्षा व तकनीक का ही योगदान है, ना कि किसी ओर चीज का।

वर्तमान में जैसे निजी क्षेत्र का विस्तार हुआ है। इससे रोजगार के नये अवसर पैदा हुये हैं लेकिन निजी व सरकारी दोनों ही क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा बढ़ी है। इससे केवल सामान्य शिक्षा की बजाय उच्च व तकनीकी शिक्षा का महत्व बढ़ा है। अत: समय रहते अपना लक्ष्य बनाकर मेहनत करना प्रारम्भ कर दें ताकि लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सकें।

''व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित प्राणी है, वह जो सोचता है वही बन जाता है''- **महात्मा गाँधी**

''उठो जागो तब तक न रुको, जब तक की तुम्हें अपना लक्ष्य न मिल जायें।'' - **स्वामी विवेकानन्द**

"Dream big and aim higher it's a crime to dream small" - **Dr. A.P.J. Abdul Kalam**

''कन्या-भ्रूण हत्या : एक चिन्तनीय विषय''

1. प्रस्तावना - परमात्मा की सृष्टि में अन्य प्राणियों की अपेक्षा मानव का विशेष महत्व हैं, उसमें नर के समान नारी का समानुपात नितान्त वांछित है। नर और नारी दोनों के संसर्ग से भावी सन्तान का जन्म होता है तथा सृष्टि - प्रक्रिया आगे बढ़ती हैं, परन्तु वर्तमान काल में अनेक कारणों से नर-नारी के मध्य लिंग-भेद का वीभत्स रूप सामने आ रहा है। हमारे देश में कन्या -भ्रूण हत्या आज अमानवीय कृत्य बन गया है जो कि चिन्तनीय विषय है।

2. कन्या-भ्रूण हत्या के कारण - हमारे यहाँ मध्यम वर्गीय समाज में कन्या-जन्म अमंगलकारी माना जाता है, क्योंकि कन्या को पाल-पोषकर, शिक्षित उसका विवाह करना पड़ता है। इसलिए कन्या को पराया धन मानकर उसकी उपेक्षा की जाती है और पुत्र को वंश-वृद्धि का कारक, वृद्धावस्था का सहारा मानकर उसकी कामना की जाती है।

3. कन्या - भ्रूण हत्या की विद्रूपता - वर्तमान में अल्ट्रासाउण्ड मशीन वस्तुत: कन्या-संहार का हथियार बन गया है। लोग इस मशीन की सहायता से लिंग-भेद ज्ञात कर यदि गर्भ में कन्या हो, तो कन्या-भ्रूण को गिराकर नष्ट कर देते हैं। जिसके कारण लिंगानुपात कम होता जा रहा है और लड़कों की शादियाँ नहीं हो पा रही है। एक सर्वेक्षण के अनुसार हमारे देश में प्रतिदिन लगभग ढाई हजार कन्या-भ्रूणों की हत्या की जाती है।

4. कन्या-भ्रूण हत्या के निषेधार्थ उपाय - भारत सरकार ने कन्या-भ्रूण हत्या को प्रभावी ढंग से रोकने के लिए अल्ट्रासाउण्ड मशीनों से लिंग-ज्ञान पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया है। इसके लिए पूर्व में प्रसवपूर्व निदान तकनीक अधिनियम 1994 के रूप में कठोर दण्ड-विधान किया गया है, साथ ही नारी सशक्तीकरण, बालिका नि:शुल्क शिक्षा, पैतृक उत्तराधिकार, समानता का अधिकार आदि अनेक उपाय अपनाये गये हैं। यदि भारतीय समाज में पुत्र-पुत्री जन्म में अन्तर न मानकर, पुत्री-जन्म को घर की लक्ष्मी मानकर स्वागत किया जाए, तो इससे कन्या-भ्रूण हत्या पर प्रतिबन्ध स्वत: लग जायेगा।

5. उपसंहार - वर्तमान में लिंग-चयन एवं लिंगानुपात विषय पर काफी चिन्तन किया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्रसंघ में कन्या संरक्षण के लिए घोषणा की गई है। भारत सरकार ने भी लिंगानुपात को ध्यान में रखकर कन्या-भ्रूण हत्या का यह कठोर प्रतिबन्ध लगा दिया है। वस्तुत: कन्या-भ्रूण हत्या का यह नृशंस कृत्य पूरी तरह समाप्त होना चाहिए।

छात्रा का नाम - **मोनिका**
पिता का नाम - **श्री सत्यवीर**
रा.उ.मा.वि.-दोसोद (अलवर)
कक्षा - **Xth**

राठ बाल वाणी के प्रकाशन का उद्देश्य

वर्तमान समय में बालक टी.वी. एवं मोबाइल की वजह से पुस्तक पढ़ने से दूर होते जा रहे हैं। इससे बालकों के व्यक्तित्व का सही ढंग से विकास नहीं हो पा रहा है। अत: इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य बालकों की सृजनात्मक क्षमता, बौद्धिक क्षमता के साथ उनकी विचार अभिव्यक्ति की क्षमता को बढ़ाना है।

अत: यह राठ क्षेत्र की समस्त विद्यालयों के छात्र-छात्रा अपनी स्वरचित रचना (कविता, कहानी, निबंध) Santoshdevicharitabletrust.com बेवसाइट पर या संकल्प कोचिंग बहरोड़ पर प्रतिमाह की 15 तारीख तक भेज सकते हैं या फिर 96362 43674 WhatsApp कर सकते हैं

कविता, कहानी एवं निबंध प्रत्येक विद्या में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को क्रमश: 1100 व 500 रुपये का पुरस्कार एवं ट्रस्ट द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।

राठ बाल साहित्य का प्रथम संस्करण प्रकाशित होने के उपलक्ष में प्राप्त समस्त रचनाओं को पत्रिका में स्थान देने का प्रयास किया गया है और प्रत्येक विद्यार्थी को 500-500 रुपये पुरस्कार स्वरूप व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जा रहा है। आगामी अंक में प्रथम स्थान को 1100 रुपये एवं द्वितीय स्थान प्राप्त विद्यार्थी को 500 रुपये प्रदान किये जायेगें।

''नैतिक मूल्य''

दिलीप यादव
I.A.S.

नैतिक मूल्य एवं मनुष्य का चरित्र ही उसके अस्तित्व का निर्धारण करता है। मैकाईवर एवं पेज के अनुसार - ''नैतिकता का तात्पर्य नियमों की उस व्यवस्था से है, जिसके द्वारा व्यक्ति का अन्त: करण अच्छे बुरे का बोध प्राप्त करता है। यह मूल्य ही निश्चित करते हैं कि कोई व्यक्ति जीवन में किन ऊँचाईयों को छुयेगा एवं समृद्धि एवं वैभव के पथ पर अग्रसर होगा।''

भारत देश में पुरातन काल से ही नैतिक मूल्यों को जीवन की आधारशिला माना गया है। यह इस वैदिक मंत्र से परिलक्षित होता है- ''असतो मा सद् गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृत गमय।'' अर्थात् - हे ईश्वर मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। आज के आधुनिक युग में नैतिक मूल्यों की उपयोगिता एवं सार्थकता और भी अधिक हो जाती है। जहां किताबी शिक्षा का स्तर तो कई गुना बढ़ गया है, परन्तु साथ ही अनैतिकता, असत्य एवं आतंकवाद जैसे आपराधिक गतिविधियों में बढ़ोत्तरी हुई है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि नैतिकता मात्र पोथी पढ़ने से नहीं अपितु अपने गुरुजनों, बड़े-बुजुर्गों एवं सदियों से चली आ रही सभ्यता को समझने एवं आत्ससात करने से आती है।

भारतीय समाज में पुरातन काल से ही बड़ों का आदर, वसुधैव कुटुम्बकम, जीव एवं प्रकृति प्रेम सिखाया गया है। बड़े-बुजुर्ग जहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के सिद्धान्तों एवं राजा हरीश चन्द्र की कहानियों के माध्यम से नई पीढ़ी को नैतिकता, सत्य, आचरण का संदेश देते रहे है। आज जब विश्व में Global Warming, Castom Footprint, River Conservation, Everysteam Sustainability जैसे विचारों को सभी पेश गम्भीरता से ले रहे हैं। यह माने जाते रहे हैं, तभी तो नदी, पेड़-पौधों का पूजने के माध्यम से संरक्षण दिया जाता रहा है अर्थात् नैतिक मूल्य पर दृढ़ होने से न सिर्फ व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ शिष्ट व्यवहार रखता है अपितु अपने पर्यावरण को भी स्वच्छ-सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी उठाता है। वहीं नैतिक मूल्य के अभाव में यह कहावत सार्थक होती है- ''नैतिकता के अभाव में जाती प्रतिष्ठा की जल सूख। बचती न कोई पूँजी, न कोई रसूख।।'' इससे यह तो स्पष्ट है कि जीवन को सफल बनाना है, तो नैतिक मूल्यों को अपनाना अति आवश्यक है। यह स्वयं के, समाज के, देश के एवं विश्व के विकास एवं संचालन के लिए नितांत आवश्यक है।

अत: भारतीय होने के नाते हम सभी की यह विशेष जिम्मेदारी बनती है कि जो मूल्य भारत की धरती से प्रारम्भ होकर विश्व में प्रसारित हुए हैं, उन्हें खुद में आत्मसात करआगे बढ़ाऐ एवं उनका पालन करें अपने एवं सभी के जीवन को सार्थक बनाएँ। ऐसा दैनिक जीवन में करने से एवं अपने मूल्यों पर दृढ़ रहने से हम जीवन जीने की कला सीखते हैं, रोजमर्रा की परिस्थितियों का व्यावहारिक ज्ञान होता है। अत: घर, विद्यालय से नैतिक मूल्यों का विकास से नैतिक मूल्यों का विकास करें, आपके ही कन्धों पर देश का भार होगा।

''क्या नैतिक, क्या अनैतिक का जो करें विचार,
जागरुकता और सत्य की शक्ति रहे उसमें अपार।
जीवन की हर घड़ी में आवश्यक है यह बात।।''

भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या : एक समस्या

1. प्रस्तावना – वर्तमान में बढ़ती हुई जनसंख्या एक विकराल समस्या का रूप धारण कर रही है। इससे हमारे देश के विकास में बाधा उत्पन्न हो रही है। देश में लगातार बढ़ रही जनसंख्या के अनेक दुष्परिणाम नजर आ रहे हैं। 2011 की जनसंख्या तथा अब की जनसंख्या में बहुत अन्तर दिखाई दे रहा है। 2011 की जनसंख्या की अपेक्षा वर्तमान में जनसंख्या की काफी वृद्धि हुई है।

2. बढ़ती जनसंख्या के कारण – भारतीय परम्पराओं में बाल-बच्चों से भरा पूरा घर सुख का सागर माना जाता है। यहाँ के लोग मानते हैं कि पिता का वंश चलाना हमारा कर्त्तव्य है। ईश्वर प्राप्ति के लिए पुत्र का होना आवश्यक माना जाता है। परिणामस्वरूप लड़के की चाह में अनेक लड़कियाँ जन्म ले लेती हैं, तथा जनसंख्या वृद्धि का कारण है। पुरुष समाज की प्रधानता होने के कारण लोग लड़के की चाह में कई संतान उत्पन्न कर लेते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मात्र पाँच दशकों में यह 33 करोड़ के आँकड़ें को पार कर गई है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि जनसंख्या कितनी तीव्र गति से बढ़ रही है।

3. बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणाम – बढ़ती जनसंख्या से रोजगार के अवसर में कमी आ रही है। चारों ओर देखने पर भीड़ ही भीड़ है, भीड़ के कारण हर जगह गन्दगी, अव्यवस्था फैल रही है। देश का समुचित विकास नहीं हो रहा है। खुशहाली के स्थान पर लाचारी बढ़ रही है।बेरोजगारी बढ़ने के कारण लोग, चोरी, डकैती आदि आय कमाने का रास्ता अपनाने लगे हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण लोगों की आय में कमी आ रही है। बढ़ती जनसंख्या के कारण हमारा देश कमजोर होता जा रहा है, तथा इसकी एकता और अखण्डता में कमी आ रही है। छोटी-छोटी समस्याओं को लेकर आन्दोलन हो जाते हैं।

4. जनसंख्या वृद्धि कम करने के उपाय – जनसंख्या वृद्धि रोकना हमारे लिए आवश्यक बन गया है। इसलिए जरूरी है कि प्रत्येक नागरिक अपने परिवार को सीमित करें। दो से अधिक संतान को जन्म न देवें। लड़के-लड़की को एक समान मानने से जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण करना आसान हो सकता है। जनसंख्या वृद्धि रोकना हमारा राष्ट्रीय धर्म है। यदि जनसंख्या कम होगी तो हमारा देश भी शिक्षित होगा। हमें सभी लोगों को जनसंख्या वृद्धि को कम करने के लिए जागरूक करना होगा।

5. उपसंहार – जनसंख्या वृद्धि के कारण अधिकतर लोग शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। यदि लोग बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या को समझ ले तो हमारे देश को विकास करने से तथा आसमान की बुलन्दियों को छूने से कोई नहीं रोक सकता है। यद्यपि जनसंख्या से ही सृष्टि की रचना या विकास होता है, परन्तु सृष्टि के विनाश का एक कारण जनसंख्या वृद्धि भी है।

छात्रा का नाम – **मोनिका शर्मा**
पिता का नाम – **श्री सुभाष शर्मा**
रा.उ.मा.वि.-दोसोद (अलवर)
कक्षा – **Xith**

''कविता''

मेरा साहस मेरी इज्जत मेरा सम्मान है पिता।
मेरी ताकत मेरी पूँजी मेरी पहचान है पिता।।
घर की एक-एक ईंट में शामिल उनका खून-पसीना।
सारे घर की रौनक उनसे सारे घर की शान पिता।।
मेरी इज्जत मेरा रूतबा मेरा मान है पिता।
मुझको हिम्मत देने वाले मेरा अभिमान है पिता।।
सारे रिश्ते उनके दम से सारे नाते उनसे है।
सारे घर के दिल की धड़कन सारे घर की जान पिता।।
शायद रब ने देकर भेजा फल ये अच्छे कार्यों का।
उसकी रहमत उसकी नेअमत उसका है वरदान पिता।।

छात्रा का नाम – **अनामिका**
पिता का नाम – **श्री रमेश चन्द**
रा.उ.मा.वि.-माँचल, बहरोड़
कक्षा – **XIIth**

सूरज जल्दी आना जी

एक कटोरी, भर कर गोरी
धूप हमें भी लाना जी।
सूरज जल्दी आना जी।
जमकर बैठा यहाँ कुहरा
आर-पार न दिखता है।
ऐसे भी क्या कभी किसी के
घर में कोई टिकता है?
सच-सच जरा बताना जी।
सूरज जल्दी आना जी।।
कल की बारिश में जो भीगे।
कपड़े अब तक गीले हैं।
क्या दिवारें क्या दरवाजे।
सब के सब ही गीले हैं।
छोड़ो आज नहाना जी।
ना-ना-ना-ना-ना-ना जी।
सूरज जल्दी आना जी।।

छात्रा का नाम – **प्रियंका यादव**
रा.मा.वि.-मोमनपुर, बहरोड
कक्षा – **Ixth**

Beti Bachao, Beti Padhao

Beti Bachao, Beti Padhao is a Social Scheme Launched by the Prime Minister of India. There is Imbalance of birth rate and Discrimination against a girl Child in India. People Ragard their daughters of other wealth. They Show differences between a son and a daughter it is a great curse to our Society. The People should give education to their daughters equal to their sons. We Should awaken people to save and teach a daughter Good education makes daughter life a heaven.

Beti Bachao, Beti Padhao launched at June 2014 of PM Narendra Modi. Nowadays education is very important daughter in life. A poor defective, Incomplete, bad education can make daughter life a hell. And life without education is a beastial one.

Name - Pooja Class - Xth
Father - Badri Singh
Vill. - Dosod
Govt. Sen. Sec. School. Dosod.

Knowledge Corner

1. स्वराज्य बिल (1895) में सर्वप्रथम किसने संविधान सभा के गठन की बात कही।
(1) जवाहरलाल नेहरू (2) बाल गंगाधर तिलक
(3) दादाभाई नौरोजी (4) महात्मा गाँधी (2)
2. 1922 में किसने कहा ''भारतीय संविधान भारतीयों की इच्छानुसार होगा''
(1) महात्मा गाँधी ने (2) नेहरू ने
(3) तिलक ने (4) फिरोजशाह मेहता ने (1)
3. कार्य का मात्रक है–
(1) जूल (2) न्यूटन
(3) वाट (4) डाइन (1)
4. प्रकाश वर्ष इकाई है–
(1) दूरी की (2) समय की
(3) प्रकाश तीव्रता की (4) द्रव्यमान की (1)
5. ईसवी सन् को कहा जाता है–
(1) A.D ***(2) B.C***
(3) C.D ***(4) A.C*** (1)
6. विक्रम संवत् (मालव या कृत संवत्) प्रारम्भ हुआ–
(1) 57 ई.पू. (2) 57 ई.
(3) 78 ई.पू. (4) 78 ई. (1)
7. सौरमण्डल में कुल कितने ग्रह हैं–
(1) आठ (2) नौ
(3) दस (4) ग्यारह (1)
8. निम्नलिखित में से किन दो ग्रहों को छोड़कर शेष सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर वामावर्त घूमते हैं–
(1) बुध और शुक्र (2) पृथ्वी और शुक्र
(3) अरूण और वरूण (4) शुक्र और अरूण (4)

'याददास्त' - लघुकथा

एक दिन भाई साहब कह रहे थे, ''क्या बात है? आजकल कुछ याद नहीं रहता है। बात करते-करते भूल जाता हूँ। किसी को बहुत दिनों बाद देखता हूँ या मिलता हूँ तो पहचानने में मुश्किल होती है।''

मैनें उन्हें समझाया कि ऐसा थकान या बेवजह तनाव के कारण होता है। साथ ही वह बात जो दिल पर घाव या चुभन नहीं छोड़ती, हमारी याददास्त से बाहर हो जाती है। भाईसाहब उम्र में मुझसे काफी बड़े है, लेकिन मुझसे मित्रवत् व्यवहार करते हैं। मैनें कहा, ''सुबह-शाम दूध के साथ बादाम लीजिए, याददास्त के लिए फायदेमंद होगा।''

भाई सहाब दार्शनिक अंदाज में हँसे, फिर बोले, दूध बादाम से कुछ नहीं होने वाला। मैं तो यह सोच रहा था कि इंसान की पूरी याददास्त ही चले जाए तो कितना अच्छा हो ..... जिंदगी की सारी कटुता इस याददास्त की वजह से ही तो है।''

छात्रा का नाम - नेहा
पिता का नाम - श्री रोहिताश्व कुमार
रा.उ.मा.वि.-पहाड़ी, बहरोड
कक्षा - Vth

"One best book is equal to hundred good friends
One good friend is equal to a library"
"Dream is not that which you see while sleeping
If is something that does not let you sleep"
"Thinking should become your capital assets
no matter whatever ups and downs
You come secret in your life"
"Don't read successful stories, you will only get a message.
Read failure stories you will get some ideas to get success."
"Don't expect your friend to be a perfect person, but help your friend,
to become, a perfect person. that's true friendship young you"
"It is very easy defeat someone,
but it is very hard to "Win someone"
"Don't declare "holiday on my death Instead work on extra day" If you lare me"

A.P.J. Abdul Kalam

Name - Pooja Yogi
Govt. Sen. Sec. School. Budhwal (Alwar)
Class - XIIth

आओ पर्यावरण बचाएँ

बदलें हम तस्वीर जहाँ की
सुन्दर सा एक दृश्य बनायें
संदेश ये हम सदा एक फैलाएँ
आओ पर्यावरण बचाएँ।

फैल रहा है खूब प्रदूषण
काट रहा मानव जंगल वन
हवा हो रही है जहरीली
कमजोर पड़ रहा है इसका वन
समय आ गया है कि मिलकर
हम सब कोई कदम उठायें
संदेश ये हम सदा एक फैलाएँ
आओ पर्यावरण बचाएँ।

प्रयोग करें गाड़ी का कम हम
पैदल चलने पर जोर दें
थैले इन्हें हम कपडे के
प्लास्टिक को रबाना छोड़ दें,
अहंकार को छोड़ कर बातें
ये हम अब सब को समझाएँ
संदेश ये हम सदा एक फैलाएँ
आओ पर्यावरण बचाएँ।

हवा चाहिए शुद्ध ही सबको
पेड़ न कोई लगाता है
अनजाने में इन रोगों को
पास में खुद ही बुलाया है,
हरियाली फैलाकर आओ
सबको अब हम स्वस्थ बनायें
संदेश ये हम सदा एक फैलाएँ
आओ पर्यावरण बचाएँ।

मत व्यर्थ करो जल को
जल है तो अपना जीवन है
प्रकृति ने है जो हमको दिया
सबसे अनमोल ये वो धन है
सब जीवों को मिले बराबर
इस उद्देश्य से अब हम जल बचाएँ
संदेश ये हम सदा एक फैलाएँ
आओ पर्यावरण बचाएँ।

माता है ये धरा हमारी
हम सब इसका सम्मान करें
क्यों बिगड रहे घलाता है इसके
इस बात का हम सब ध्यान करें
भला हो जिससे सभी जनों का
आदत हम सब वो अपनाएँ
संदेश ये हम सदा एक फैलाएँ
आओ पर्यावरण बचाएँ।

छात्रा का नाम - **आरती**
रा.उ.मा.वि.-कोहराना , बहरोड़
कक्षा - **XIIth**

फलों का झगड़ा

लिए सिर पर टोकरी फूलों की,
एक माली आया हाट पे
तभी अचानक उछल-कूद सी
होने लगी उसकी टांट पे।

सबसे पहले आया अनार
बोला मुझमें दाने अपार
आम बोला लड़लक आजा
मैं कहलाता फलों का राजा

संतरा बोला रस मेरे जैसा
कहीं नहीं पाया जाता
इस जगत में हर जगह पर
बड़े चाव से खाया जाता

बोली मौसमी भाई संतरा
रस मेरा भी होता है
केवल अन्तर इतना है
वह खट्टा मीटा होता है

तभी इतराता बोला अंगूर
मैं भी होता बड़ा रसीला
किन्तु जामुन बोला भैया
मैं भी होता नीला-नीला

केला सेब न कम रहने वाले
लगे बताने अपना मोल
चीकू अंजीर कहने लगे तब
हम भी होते गोल-गोल

देखा सबको डींग हाँकते
माली बोला चुप हो जाओं
सब अपने-अपने में गुणी हैं
नहीं तुम इतना शोर मचाओं।

छात्रा का नाम - प्रतिभा वमा
रा.उ.मा.वि.-माँचल,बर्डोद (बहरोड़)
कक्षा - VIIth

हिन्दी की महिमा

किसकी अद्भुत रचना है यह
किसकी है यह प्रिय सुता
हिन्दी का हुआ जन्म कहाँ से
किसी को पूर्णतः नहीं पता

शब्दकोष इसका विशाल है
सुन्दर है इसकी गारिमा
देश विदेश और सारे जहाँ में
फैल रही इसकी महिमा

कविता गीत का अनुपम खजाना
मंत्र छन्द भी है इसमें
अलंकारों से अलंकृत है यह
साहित्यिक सुगंध भी है इसमें

हर घर और हर गली गली
बहता इसका मधुर झरना
सब जबान पर यह शोभित है
चमक गए इससे नयना

तुलसी-सूर जैसे कवियों ने
इसमें मृदु पावन काव्य लिखे
बिहारी-कबीर रसखान ने भी
इसी मेंअपने भाव कह

मातृभाषा है यह हमारी
यही हमारी शान है
इसे काम में लेना धर्म हमारा
यही हमारी पहचान है

इसी न हमारी खुशियों में
शुभ चतुर्थांद लगाए हैं
मातृ-ममता, पितृ-वात्सल्य
सभी इसी में समायें हैं

यह सब कुछ जानकर भी
यदि हमने इसे ना अपनाया
तो हमसे वे कहीं अच्छे हैं
विधाता ने जिन्हें मूक बनाया

अतः सब मिलकर करते हैं
हिन्दी का सदा रकरेंगे सम्मान
उच्च स्तर में कहेंगे हम सब
हिन्दी महान, तो हिन्द महान।

छात्र का नाम - **नरेन्द्र सैनी**
रा.उ.मा.वि.-माँचल,बर्डोद (बहरोड़)
कक्षा - **XIIth**

''कविता''

शिक्षक की गोद में उत्थान पलता है।
जहां सारा शिक्षक के पीछे चलता है।
शिक्षक का बोया पेड बनता है।
हजारों बीज वहीं पेड़ जनता है।
काल की गति को शिक्षक मोड़ सकता है।
शिक्षक धरा से अम्बर को जोड़ सकता है।
शिक्षक की महिमा महान होती है।
शिक्षक बिन अधूरी वसुन्धरा रहती है।
याद रखो चाणक्य ने इतिहास बना डाला था।
क्रूर मगध राजा को मिट्टी में मिला डाला था।
बाल चन्द्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट बनाया था।
एक शिक्षक ने अपना लौह मनवाया था।
संदीपनी से गुरु सदियों से होते आये हैं।
कृष्ण जैसे नन्हें-नन्हें बीज बोते आये है।
शिक्षक से ही अर्जुन और युधिष्ठिर जैसे नाम है।
शिक्षक की निन्दा करने से दुर्योधन बदनाम है।
शिक्षक की दया दृष्टि से बालक राम बन जाते हैं।
शिक्षक की अनदेखी से तो रावण भी कहलाते हैं।

छात्रा का नाम - अंकिता
पिता का नाम - श्री बलवन्त सिंह
रा.उ.मा.वि.-माँचल, बहरोड़ (अलवर)
कक्षा - XIIth

Be Yourself
no matter what other people think
God made you the way you are for a reason.
Besides, on original is always
Worth more than a lopy!
Once we believe in ourselves
We can risk curiosity, Wonder.
Spontoneous delight, or only Experience that
Reveals the human spirit

E.E. Cummings

Name - **Kanchan Yogi**
Govt. Sen. Sec. School. Budhwal (Alwar)
Class - **Xth**

''कहानी''

एक बार एक साधु था वह जंगल से गुजर रहा था। रास्तें में अंधेरा होने पर उसने एक घर में शरण ली। उस घर के मालिक ने साधु का खूब सत्कार किया और उसे सम्मान के साथ भोजन खिलाकर बिस्तर पर सुला दिया। उस घर के मालिक के पास एक बहुत अच्छा घोड़ा था। रात को सोते समय साधु के मन में विचार आया कि क्यों न मैं इस घोड़े को चुरा लू? ऐसा सोचकर साधु ने उस घोड़े को चुरा लिया और रात को वहाँ से निकल पड़ा। कुछ दूर पहुँचने पर जब सूर्योदय हुआ तो साधु जैसे ही शौच आदि से मुक्त हुआ तो उसके मन में विचार आया कि मैं तो लोगों को सत्संग करवाता हूँ, और यह चोरी का विचार मेरे मन में कैसे आया यह तो गलत कार्य है। मुझे यह घोड़ा वापिस कर देना चाहिए जब वह घोड़ा वापिस करने करने जाता है तो मालिक से पूछता है आप क्या काम करते हैं, मालिक ने कहाँ मैं चोरी करता हूँ और अपना पेट पालता हूँ। साधु समझ गया था कि उसके मन में घोड़े को चुराने का विचार क्यों आया। चोरी किये हुए धन का भोजन करने से उसके मन में चोरी के विचार उत्पन्न हुए थे और जैसे ही वह भोजन शरीर से निकल गया और उसका मन वैसा ही हो गया। अतः हमे ईमानदारी से कार्य करना चाहिए।

शिक्षा- जैसा खाये अन्न, वैसा होय मन।

छात्रा का नाम - **संकिता कुमारी**
रा.उ.मा.वि.-महाराजावास (अलवर)
कक्षा - **XIth**

सबसे बड़ी सीख

बहुत पुराने समय की बात है एक आश्रम था। जहाँ पर बहुत सारे बच्चे दूर-दूर से शिक्षा ग्रहण करने आते थे। उन्हीं में से मोहन और कमल था। उन दोनों की शिक्षा पूरी हो चुकी थी।

आश्रम के नियम के अनुसार - अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद घर जाना था लेकिन जब मोहन और कमल घर जाने लगे तो उन्हें गुरुजी ने अपने पास बुलाकर कहा। बच्चे आज तुम अपनी शिक्षा पूर्ण करके तुम घर जा रहे हो लेकिन तुम्हें अपने घर जाने से पहले एक ओर परीक्षा देनी होगी। इस परीक्षा में अगर तुम सफल हो गऐ तो तुम्हें घर जाने दिया जाएगा लेकिन विफल हो गए तो यही रूकना पढ़ेगा तभी मोहन गुरुजी से पूछता है। गुरुजी आप किस परीक्षा के बारे में बात कर रहे हैं, हमने तो अपनी शिक्षा पूरी कर ली। आज तो हमें घर जाना है। कौनसी परीक्षा देनी है-

गुरुजी - गुरुजी ने मुस्कराते हुए कहाँ - तुम दोनों को एक छोटा सा काम करना है। तुम दोनों को एक-एक कबूतर देता हूँ। तुमे इसे मारना है और ऐसी जगह मारना जहाँ कोई न देख रहा हो। मोहन और कमल दोनों कबूतर लेकर चले गये।

मोहन - मोहन अपने कबूतर को लेकर एक सुनसान जगह में जाता है। वहाँ गुफा में जाकर देखता है कि यहाँ कोई नहीं है मैं इसे मार दूँ, तो किसी को पता भी नहीं चलेगा। यह कहकर कबूतर की गर्दन मरोडकर तोड़ देता है। गुरुजी के पास आकर कहता है। मैनें कबूतर को सुनसान जगह पर मारा था। जहाँ पर कोई नहीं देख रहा था। अब तो में घर जा सकता हूँ।

गुरुजी ने कहा - मोहन कमल को आ जाने दो।

धीरे-धीरे दिन ढल गया कमल अब तक नहीं आया गुरुजी को चिंता होने लगी। इतनी देर में कमल आ गया।

कमल -"प्रणाम गुरुजी" कमल तुम इतनी देर से क्यों आये हो।

कमल - गुरुजी बहुत लम्बी कहानी है ये समझ लीजिए मैं फेल हो गया। मुझे क्षमा करें मैं कबूतर को नहीं मार सकता।

गुरुजी - जब तक पूरी बात नहीं बताओगें तुम आश्रम में नहीं रह सकते।

कमल - गुरुजी जैसा आपने कहा था वैसे ही मैं कबूतर को जंगल ले गया लेकिन वहाँ के जानवर देख रहे थे फिर में जंगल के अन्दर ले गया। वहाँ जानवर तो मौजूद नहीं थे लेकिन ओर पेड़-पौधे देख रहे थे। इसके बाद समुंद्र देख रहा था और "सबसे बड़ी बात मैं स्वयं उसे मारते देख रहा था।"

गुरुजी मुस्कराते और कहा कमल तुमने सबसे बड़ी शिक्षा ग्रहण की है मैं तुम्हें समझाना चाहता था तुम समझ गऐ। क्योंकि एकांत में भी यही हमारा अंश है। जो हमे गलत काम कम करने से रोकता है। अगर सभी ये सोचे कि गलत काम करने से हमें कोई न कोई देख रहा होगा। तो हम कभी गलत काम नहीं करेंगे। तत्पश्चात् गुरुजी की बात सुनकर मोहन ने अन्दाजा लगा लिया अभी और शिक्षा की जरूरत है इसलिए वह चुपचाप आश्रम में चला गया वहीं से कमल घर चला गया।

शिक्षा - इससे हमें शिक्षा मिलती है कि हमें भी बुरा काम करने से पहले दस बार सोचना चाहिए। इसे कहीं न कहीं कोई तो देख रहा होगा।

छात्रा का नाम - **आशा**
रा.उ.मा.वि.-कोहराना, बहरोड़
कक्षा - **XIIth**

बेटी की पुकार (कविता)

माँ, माँ, मुझे इस दुनिया में मत लाओ।
मैं तेरी ही अंश हूँ, माँ पर मुझे इस दुनिया को ना दिखलाओ।
बाहर आने से पहले ही मुझे मार डालो।
अब मारोगी तो 2 मीटर कपडा ही लगेगा।
बाहर आकर मारी तो, माँ, कैण्डल मार्च, रैली ना जाने कितनी होंगी।
उन्नाव, कलुबा और हैदराबाद सब जगह जैसी होगी।
निर्भया, दिशा मत बनाओं माँ।
नन्हें-नन्हें हाथ मेरे, नन्हा सा दिल है, अब मरुँगी तो इतना नहीं तडपूँगी।
निर्मम हत्यारों के हाथों मर कर भी चैन ना पाऊँगी।
दहेज, हिंसा कारण ना होगा माँ।
कहाँ-कहाँ अपने को बचाऊँगी माँ।
कहाँ नहीं भेजोगे तुम मुझे, स्कूल, कॉलेज और आत्मनिर्भर भी बनाओगी
लेकिन समाज के भेडियों से कैसे मुझे बचाओगी।

छात्रा का नाम - **डिम्पल**
रा.उ.मा.वि.-गुर्जरवास, बहरोड़
कक्षा - **Xth**

''कविता''

रोने से तकदीर नहीं बदलती
वक्त से पहले रात नहीं छलती
दूसरों की कामयाबी लगती हैं आसान
पर कामयाबी रास्ते में पड़ी नहीं मिलती
अगर कामयाबी इत्तेफाक से मिल भी जाए
तो सच है कि वह पचती नहीं
कामयाबी पाना है, पानी में आग लगाना है
और पानी में आग आसानी से नहीं लगती
हिम्मत न हार हौसलें बुलन्द रख, ऐ दोस्त
फिर कौनसी बिगड़ी बात है, जो नहीं बनती
देखों तो फिर कैसे तकदीर नहीं बदलती

छात्रा का नाम - **अन्तिम शमा**
रा.उ.मा.वि.-महाराजावास, बहरोड़
कक्षा - **XIth**

आजादी का सुख

एक बार एक ऊँट अपने स्वामी हरिसिंह से नकेल छुड़ा कर भाग खड़ा हुआ। वह भागता-भागता एक नदी के किनारे पहुँच गया। नदी ने उसके आगे जाने का मार्ग रोक दिया। वह ऊँट रास्ते में हरे भरे खेत और पत्ते भरी झाड़ियाँ छोड़ आया था। वह चाहता तो छककर भरपेट चर सकता था। बेचारा ऊँट थक कर नदी के पास ही बैठ गया। वह डर के मारे बलबला भी नहीं सकता था। कहीं हरिसिंह आकर उसे पकड़ न ले। भूख के मारे उसकी आँतें कुलबुला रही थी, पर वहाँ पानी के सिवा और कुछ नहीं था। इस स्थिति में उसे दो दिन बीत गए, तभी एक उड़ता हुआ कौआ आया। उसे बेचारे ऊँट की दशा पर दया आ गई, बोला- "ऊँट मामा। मैं उड़ता हूँ, तुम मेरे पीछे-पीछे चले आओं मैं तुम्हें हरे-भरे खेत तक पहुँचा दूँगा।" "अच्छा कौवे भांजे।" कहकर ऊँट खड़ा हुआ। तभी में कभी उसे कुछ याद आ गया। उसने पूछा "कौवे भांजे। उसे खेत में कभी कोई आदमी तो नहीं आता।" ऊँट की बात को सुनकर कौआ हँस पड़ा बोला- "ऊँट मामा! भला हरा-भरा खेत आदमी के बिना कैसे होगा"

"तब तो कौवे भांजे, मैं यही अच्छा हूँ।" ऊँट ने दुःखी मन से कहा। "ऊँट मामा! यहाँ तो तुम भूखे मर जाओगें।" कौवे ने समझाया। "पर कौवे भांजे, यहाँ रात-दिन नकेल डालकर कोई सताया तो नहीं करेगा।" ऊँट ने संतोष और गर्व भरे स्वर में उत्तर दिया।

शिक्षा - "पराधीन सपनेहूँ सुख नाहीं।"

छात्रा का नाम - **अमीशा**
पिता का नाम - **श्री महेश सिंह**
संत जे.आर.डी.सी.सै. वि., मौसमपुर, बहरोड़
कक्षा - **VIIIth**

अनपढ़ होना बड़ा गुनाह

हाथी चाचा ने जंगल में,
एक आदेश निकाला
बूढ़े और प्रौढ़ पशुओं को
खोलेंगे अब शाला
नहीं कोई भी पढ़ा लिखा
सभी अँगुठा छाप
सहते रहते गलत सलत सब
बंदर मामू बड़े शहर से
पढ़ लिख कर है आए
हाथी चाचा शिक्षक पद पर,
उन्हें नियुक्ति दे आए।
पढ़ा लिखाकर मामू उनको,
कर देगें होशियार।
अनपढ़ होना इस युग का है,
सबसे बड़ा गुनाह।
घूम-घूम कर हाथी करता,
है सबको आगाह।

छात्रा का नाम - मंजू बाई
रा.उ.मा.वि.-मोमनपुर, बहरोड़
कक्षा - Xth

''कहानी''

एक बार किसी गॉव में एक मंदिर था। गाँव के लोग प्रतिदिन उस मंदिर में दर्शन के लिए जाते थे। गाँव से मंदिर के रास्ते में एक पत्थर पड़ा हुआ था। लोग रोज उस पत्थर से टकराते, ठोकर खाते, गिरते और पत्थर गिराने वाले को कोसते और चले जाते। उस रास्ते के साथ ही एक गुलाब का पौधा था। जिस पर एक बहुत ही सुन्दर फूल लगा था। जब-जब कोई पत्थर को कोसता, गुलाब का फूल हँसता और पत्थर से कहता अरे पत्थर तेरी भी कोई जिन्दगी है। हर कोई तुझे कोसता है, मुझे देख, मैं कितना सुन्दर हूँ। हर कोई मुझे पसन्द करता है। पत्थर ने कहा- 'मेरी किस्मत' एक दिन एक मुर्तिकार उस पत्थर से टकराया। पर उसने उसे नहीं कोसा और पत्थर को उठाकर घर ले गया और उस पत्थर से भगवान की मूर्ति बनाकर उसी मंदिर में स्थापित कर दिया। फिर एक दिन किसी व्यक्ति ने गुलाब के फूल को तोड़ा और उस पत्थर रूपी मूर्ति के चरणों में अर्पित कर दिया। अब पत्थर ने कहा -'बोल, गुलाब किसकी जिन्दगी अच्छी है? गुलाब अब निरूत्तर था प्रत्येक वस्तु या व्यक्ति का अपने समय पर अपना महत्व होता है।

छात्रा का नाम - मुस्कान रावत
रा.उ.मा.वि.-गुर्जरवास, बहरोड़
कक्षा - XIth

''गुणों की पहचान'

एक बार एक शिष्य अपने गुरु के पास पहुँचा और बोला कि गुरूजी एक बात समझ मैं नहीं आती कि आप इतने साधारण वस्त्र पहनते हैं जिन्हें देखकर लगता नहीं कि आप वो ही ज्ञानी व्यक्ति है जो सैंकड़ों शिष्यों को शिक्षित करने का कार्य करता है। गुरुजी मुस्कुराए और एक अँगूठी देते हुए बोले- मैं तुम्हारी जिज्ञासा शांत जरूर करुँगा लेकिन पहले मेरा एक छोटा-सा काम कर दो। इस अँगूठी को लेकर बाजार में जाओं और किसी सब्जी वाले या दुकानदार को बेच दो लेकिन इतना ध्यान रहे कि इसके बदले में सोने का एक सिक्का जरूर लेकर आना। शिष्य अँगूठी को लेकर वापस लौटा।

गुरुजी बोले- क्या हुआ, तुम इसे लेकर वापस क्यों लौट आये। शिष्य बोला - गुरुजी दरअसल मैंने इसे सब्जी वाले व अन्य दुकानदारों को बेचने की कोशिश की लेकिन कोई भी इसके बदले सोने का सिक्का देने को तैयार नहीं हुआ।

तब गुरुजी बोले- अच्छा कोई बात नहीं इस बार इसे लेकर किसी जौहरी के पास जाओं और इसे बेचने की कोशिश करो। शिष्य फिर से अँगूठी लेकर निकल पड़ा। इस बार वह कुछ देर से वापस आया। गुरुजी ने फिर पूछा - क्या हुआ इस बार भी क्या कोई इसके बदले सोने का सिक्का देने को तैयार नहीं हुआ। इस बार शिष्य के हाव-भाव कुछ अजीब से लग रहे थे। वह घबराते हुए बोला - अरे नहीं गुरुजी इस बार मैं जिस किसी जौहरी के पास गया सभी ने ये कहते हुए इसे वापस लौटा दिया कि यहाँ के सारे जौहरी मिलकर भी इस अनमोल हीरे को नहीं खरीद सकते। इसके लिए तो लाखों सोने के सिक्के भी कम है।

तब गुरुजी बोले- जिस प्रकार ऊपर से देखने पर इस अनमोल अँगूठी की कीमत का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। उसी प्रकार किसी व्यक्ति के वस्त्रों को देखकर भी उसका अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। व्यक्ति की विशेषताओं को जानने के लिए उसे भीतर से देखना चाहिए बाहरी आवरण तो कोई भी धारण कर सकता है लेकिन आत्मा शुद्धता और ज्ञान का भण्डार तो अन्दर छिपा होता है।

शिक्षा- हमें किसी भी व्यक्ति की विशेषताओं को जानने के लिए उसे भीतर से देखना चाहिए ना कि बाहरी वेशभूषा को देखना चाहिए।

छात्रा का नाम - **प्रियंका**
पिता का नाम - **श्री मातादीन**
संत जे.आर.डी.सी.सै. वि., मौसमपुर, बहरोड़
कक्षा - **XIIth**